

DPN 6212 प्यपु स्तोत्र

Title : १. शनैश्चर स्तोत्र २. देवी कवच
३. दुर्गा शतनाम ४. भवानी शंकराष्टक

1. ŚĀNAISĀCĀRA STOTRA 2. DEVĪ
KAVĀCA 3. DURGĀ ŚĀTANĀMA
4. BHAVĀNĪ ŚAÑKARĀṢṬAKA

Run. No. 6903

Cat. No.

Micro. No.

Subject स्तोत्र / stotra

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 56 X 46.5

Folios 1

Lines (in a page) 70

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator ४. शंकराचार्य

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon : श्री ३ कृष्णाय नमो नमः ॥ ॐ नमः शनैश्चराय नमः ॥

- ① इति श्रीस्कन्दपुराणे शनैश्चरस्तोत्रं समाप्तं ॥ ② इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे भावार्णवके
मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये प्रह्लाद (क्त) देव्याः कवचः समाप्तं ॥ ③ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे दुर्गाशत
नाम स्तोत्रं समाप्तं ॥ ④ इति शंकराचार्यविरचितं श्रीभवानीशंकराष्टकं समाप्तं ॥

0
CMS
5
10
15
20
25
30

श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः

श्रीगणेशाय नमः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ प्रथमं
महोदधेः पद्मं सप्तमं निवातम् ॥ गणेशाय नमः ॥ वि
नया मास याधिवा ॥ १॥ अथ वृद्धा नि विरथा नाः याजाय मय ॥
पूजा ॥ वक्रवर्तिन विरुयः सकाक्षी याधिवा ॥ २॥ कर्तिका
कर्मणि लात्वा ववहे ला विनहि स ॥ ३॥ अदिनी वदयि ला मु
निर्या स्यति सांयनी ॥ ३॥ अकठ म्द मि ल्क कं सुता सुत
यं करं ॥ द्वादश कनु दूर्ति कं ल विरथि मि द्वा ॥ ४॥
त्रन कुत्वा न गो वा ॥ मन्त्रि ति स ह याधिवा ॥ ५॥ अश्व न गत्र गमा
हय ही ना समनु ग ॥ ६॥ व व वि नि स व ला का श्वः क य म न त्त मा
ग न ॥ अ कु ल नु ज ग द्वा यो न जान य दा दी कं ॥ ७॥ प्रयच्छ
प्रथ ना याजा व सि य प्र म्खान दि जान ॥ सम धा व कि म क मि
बुद्धि मा दि ज स ल म ॥ ८॥ व मि य उ वा य ॥ प्र जानां य नि व क यः
ग मि न हि व्ने क न ॥ ९॥ अथा ग स सा ला दुः प्र म्ख का दि रि ॥
था ॥ १०॥ न या स छि त्त म न साः सा द स व र मं स द ॥ स मा दा य ध न
दि यः दि था य ध म म चि न ॥ ११॥ अथ मा र्ग सु वे ग न ग नान क प्र मं
धु लं ॥ स या दे या ज ना न्य कु ल कं स र्थ य वि मं मि तं ॥ १२॥ अदिनी व
वृ मा ला यः या जा द अ थ म्द ॥ न ल्प का श्व नं दि य म भि र ल्प दि द्वा
वि न ॥ १३॥ हं स व र्ण ह ये थु कः म हा क नु म म्द ॥ दी य मा ना म हा
र त्ने ॥ की र्ति म्द ॥ १४॥ व र्ण ज स ग द्वा का र्ण दि ती य वृ
रा स्करं ॥ अ कं धू त्रि तं रा य स हा ना मु नि आ जि नं ॥ १५॥
कर्तिका कर्म निमित्ताः प्रा वि भक्ति ल ग दि नि ॥ द्वादश गत्र य म्
यः न ल्प स ल्प कृ ष्ण म्द ॥ १६॥ स हा ना य म्द नि द्वाः सुता सुत वि
वि म द्द नं ॥ ह मि ला न ह या मो रः नि दं व र न म व वि ॥ १७॥ अ नि
म्य न र्वा रा ॥ यो र्थ व न्ने व रा ज न्द्रः य रं त्रि य ल यं क रं ॥ द वा सु त म
न र्था म्दः मि द्वा वि द्वा य ना र गा ॥ १८॥ म या व ला किं गा रा ज न्द्र
स्य म्द सु व र्ण कि न ॥ गु र्वा हं न व ना ज न्द्रः न य सां यो र्थ व न्द्र ॥ १९॥
वल बुद्धि र द्वा म्द मिः म न सा य द ती यि नं ॥ द गत्र य थ उ वा रा ॥ ला
हि नि न द यि ला नुः न ग न्द्र वं ल्प म्द ॥ २०॥ स रि त मा ग राः या क
या व ७ या व र्ण द्वा क म दि नी ॥ या रि त न म याः मो र ना न्य मि द्वा
मि न व रं ॥ २१॥ व र म्द म्द नि द्वा व रं द ला गु म्द व रं ॥ पु न न
व र वी नु र्वा व रं व रं स प्र न ॥ २२॥ स प्र य म्द न द रं ना जाः कु र
कृ ष्ण ल व ल द्वा ॥ या र्थ या मा स द्वा र्वा ला व र म न्य ग नि न द्वा
॥ २३॥ अ नि म्द व र ॥ द्वादश कनु दूर्ति कं ल विरथि मि द्वा व ना
॥ २४॥ कि रि त म्द म यी या नु र्वा क यि र लि वि र थि मि ॥ २५॥ व रं व रं

[illegible]

॥ या शान्तं कुरु मामेकं ॥ ब्रह्मया मग्निदेवता ॥ १॥ दक्षिणं कुरुवा
 हाः नेम्यं स्वर्गं धामिनी ॥ यमीयां वानुमीनकः वायवां मगवाहि
 नी ॥ २० ॥ उदी शान्तं कुरु को वानुमीन्यां मूलं धामिनी ॥ उदी वानु
 धिमनकः दधस्ता देव वा मय ॥ २१ ॥ प्रवंदमदिल्लनकः शम्
 धुगववाहना ॥ ज्यामवाग्रस्तुः विजयास्तु पुष्टग ॥ २२ ॥
 अजिना वामयाल्युः दक्षिणया यत्राजिना ॥ जिनामशानिनिन
 केः दूमामूर्द्धि यवस्मिना ॥ २३ ॥ मालाधनी ललाटः पु वामस्थ
 मस्मिनी ॥ प्रीमवायु योर्मस्थः यमद्यध्व वस्मनासिक ॥ २४ ॥ मंखी
 निरदुशामस्थः ॥ अग्रयादीनवासिनी ॥ कथा लो कालिकात्रक
 ॥ कर्ण मूल तु भर्ग ककी ॥ २५ ॥ नासिकायां सुगंधायः वदनं स
 र्वमंगला ॥ अधनवा मृग कलाः जिह्वायायि सनस्वना ॥ २६ ॥ द
 कात्रक तु कोधरीः कण्ठ मध्य तु यक्षिका ॥ धनुर्कां विप्रद्यध्वारः महा
 मायारता लके ॥ २७ ॥ कामाक्ष्या विवर्कनकः द्वारम सवर्मगला ॥ नी
 लयी वा वाहक कण्ठः नलिकां नल कुवलि ॥ २८ ॥ खड्ग धालिध्व लो स्थः
 वाहू भवज धा विधि ॥ हस्तौ यदधि नीनकः दविकायां गुली मथा ॥
 ॥ २९ ॥ नखा मूलं ध्वनिनकः कर्ण मूल तु भर्ग ककी ॥ सुनो नकं महादेवीः म
 नु ॥ अम कविना गिनि ॥ दयल लिला देवी ॥ अम सिंह वाहिनी ॥ ३० ॥ नी
 लो रकामिनी नकः ॥ गुह्यं गुह्यं ध्वनी गथा ॥ ३१ ॥ हननाथ यमदुः सु ॥ अम
 भमहि वमदिनी ॥ कथां रगवनि देवीः जानूयां विध्व वासिनी ॥ ३२ ॥
 जंघन महावला धानाः सर्व काम प्रदायिनि ॥ गुल्फा नीनसिंदीयः
 यादपुष्टव नजसी ॥ ३३ ॥ यादां गुली श्रीधरी मः यादाधमल
 वासिनि ॥ कत्रालि निनखात्रकः शमं मया दिक सिनी ॥ ३४ ॥ शमक्या
 निको वनाः लंबवाला ध्वनी गथा ॥ नकमज्जो वमसिन्यः म्भि मदासियावनी ॥
 ॥ ३५ ॥ अना धिका लता ग्रीवः पिण्डं वम कुठ ध्वनी ॥ यमावति यद्वका
 लाः करु रूता मधि मथा ॥ ३६ ॥ काला मखी वसा कालाः मरुडा सर्व
 सधिय ॥ शुक्र वक्रा धिमनकः काया दू गे ध्वनी गथा ॥ ३७ ॥ अहं काल
 मना वृद्धिः नकं मधर्म धामिनि ॥ प्राण या भोग या धानः मदानव
 समानक ॥ ३८ ॥ वज्र हस्त यमनकः प्रार्थ कल्याण मरुना ॥ नसं न
 यं चर्ग ध्वरः मधर्म ध्वर धामिनी ॥ ३९ ॥ सर्वनात्र मम लब्धवः नकं
 नायनी गथा ॥ अयनक तु वाहीः धर्म नक तु वस्ववी ॥ ४० ॥ यम ४ की
 लिचल ध्वीवः सदानक तु ध्वस्ववी ॥ लभ्य मिद्रा धिमनकः यमन
 क तु यक्षिका ॥ ४१ ॥ यत्रात्रक मसाल ध्वीः लयात्रक तु रं ववी ॥ मग
 कं मं कत्री नकः विजया सर्व न भिक्षा ॥ ४२ ॥ नकाही ननु यस्मिन् नः वरि
 गं क व वन ॥ गत्सर्व नक मध्वीः जयनी पापना गिनि ॥ ४३ ॥ लक
 म सर्व गता धिः दुर्लभं दुर्लभं पिदा विनी ॥ ४४ ॥ नदं नदं विद्वेः ग
 वरुणा मया दिनी ॥ ४५ ॥ सवरे का करिय ध्वः कवरं मध्वद जयना
 यदमकं नग कुरुः यदि कुरु वस्मन ॥ ४६ ॥ कवरना वृता निर्य
 मप्रययाव गिनि ॥ नग्न गार्थला लंबः विजयं सर्व कामिक ॥ ४७ ॥
 यं यं चिन्तयं कामः नं गार्थला निर्मल ॥ यत्र मेधय मगुलंः प्राधानि
 विपुलं यमन ॥ ४८ ॥ निर्ययाय नमर्थः मं अम वप्राजिना ॥ न लो
 अय लव रं ॥ कवरं ना वन यमान ॥ ४९ ॥ ४९ ॥ दं दं दया ३ कवरं दं
 वाना मपि कुरु ॥ य ४ य १० तु य मी निर्यः प्री संधं प्रदु या विन
 ॥ ५० ॥ दक्षिण लो वरु स्यः गे ला कया यत्राजिना ॥ जिदं दं वं ग
 साग्रः यमप्र विव जिना ॥ ५१ ॥ नम्र धनिका धय ४ सर्व लना वि
 म्भि टका देयः कवरं जं गमं प्रापिः कुरु मया यि यद्वि यो ॥ ५२ ॥

[illegible]